अल्लाह का फरमान
००१ सुरह फातिहा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

शरू अल्लाह के नाम से जो सब पर मेहेरबान हे, निहायत रहम वाला.

तआरूफ- सुरे फातिहा मक्की हे, और इसमे ७ आयते हे, और एक रूकु हे.

सूरे फातिहा कुरान करीम की जो अभी तरतीब हे उसमे सबसे पेहली सूरत हे. बल्के ये वो सुरत हे जो मुकम्मल तौर पर नाजिल हूवी. इससे पेहले कोयी सूरत पुरी नाजिल नही हुवी थी. बल्के बाज़ सुरतो की कुछ आयते आयी थी. इस सुरत को पेहले रखने का मकसद बजाहिर ये हे के जो शख्स कुरान से हिदायत हासिल करना चाहता हो. उसे सबसे पेहले अपने खालिक व मालिक की शिफात का एतेराफ (मानते हुवे) उसका शुकर अदा करना चाहिये. और एक हकके तलब करने वाले की तरह उसीसे हिदायत मांगनी चाहिये. चुनाचे इसमे बंदो को वो दुवा सिखाई गयी हे जो एक हक के तलब करने वाले को अल्लाह से मांगनी चाहिये. यानी सीधे रास्ते की दुवा. इस तरह इस

सुरत मे सिराते मुसतकीम या सीधे रासते की जो दुवा मांगी गई हे. पुरा कुरान उसकी तशरीह हे के वो सीधा रस्ता कया हे?

तर्जुमा- नोट- ^आयत

तमाम तारीफे अल्लाह की हे जो तमाम जहानो का परवरदिगार हे. अगर आप किसी ईमारत की तारीफ करे तो दर हकीकत वो इसके बनाने वाले की तारीफ होती हे, लीहाजा इस कायनात मे जिस किसी चीज़ की तारीफ की जाये वो हकीकत मे अल्लाह ही की तारीफ हे, क्युके वो चीज़ अल्लाह की बनायी हुयी हे, तमाम जहानो का परवरदिगार केहकर इसी की तरफ इशारा किया गया हे के इन्सानो का जहान हो, या जानवरो का, जमादात (जंगल, पहाड, रेगीस्तान) का जहान हो, या नबातात का, आसमानो का जहान हो या सितारो सय्यारो (planets) और फरीशतो का, सब की पेदाइश और परवरीश अल्लाह ही का काम हे, और इन सब जहानो मे जो कोयी भी चीज़ तारीफ के काबिल हे तो वो अल्लाह की पेदाईश और परवरिश की शान की वजाह से हे^.

जो सब पर मेहेरबान हे, बोहोत मेहेरबान हे. अरबी के कायदे से रहमान के माना हे वो जात जिसकी रहमत बोहोत वसी (Extensive) हो, यानी उसकी रहमत का

फायदा सब को पोहोंचता हो, और रहीम के माना वो जात जिसकी रहमत बोहोत जयादा (Intensive) हो, यानी जिस पर हो मुक्म्मल तौर पर हो. अल्लाह की रहमत दुनिया मे सबको पोहोंचती हे, जिससे मोमीन काफिर सब फायदा उठाकर रिज्क पाते हे, और दुनिया की नेमतो से फायदा उठाते हे, और आखिरत मे अगरचे काफीरो पर रहमत नही होगी, लेकिन जिस किसी पर यानी मोमीनो पर होगी, मुकम्मल होगी, के नेमतो के साथ किसी तकलीफ का शैबा (शक और सुभा) नही होगा. रहमान और रहीम के माने मे जो ये फर्क हे उसको जहिर करने के लिये रहमान का तर्जुमा सब पर मेहेरबान और रहीम का तर्जुमा बोहोत मेहेरबान किया गया हे^.

जो रोजे ज़ज़ा का मालिक हे. रोजे ज़ज़ा का मतलब हे वो दिन जब तमाम बंदो को उनके दुनिया मे किये हुवे आमाल का बदला दिया जायेगा यु तो रोजे ज़ज़ा से पेहले भी कायनात की हर चीज़ का असली मालिक अल्लाह हे, लेकिन यहा खास तौर पर रोजे ज़ज़ा के माइलक होने का जिकर इसलिये किया गया के दुनिया मे अल्लाह ने इन्सानो को बोहोत सी चीज़ो का मालिक बनाया हुवा हे, ये मिलकियत अगरचे नाकीस अधुरी और आरजि (temporary) हे, लेकिन जाहिरी सुरत के लीहाज से

मिलकियत ही हे, लेकिन कयामत के दिन जब ज़ज़ा और सज़ा का वक्त आयेगा तो ये नाकीस और आरजि मिलकियते भी खतम हो जायेगी, उस वक्त जाहिरी मिलकियत भी अल्लाह के सिवा किसी की नही होगी^.

ए अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हे, और तुज ही से मदद मांगते हे. यहां से बंदो को अल्लाह से दुवा करने का तरीका सिखाया जा रहा हे, और इसीके साथ ये वाजेह (clear cut) कर दिया गया हे के अल्लाह के सिवा कोयी किसी कीसम की इबादत के लायक नही, निज हर काम मे हकीकी मदद अल्लाह से ही मांगनी चाहिये, सही माने मे कारसाज काम बनाने वाला उसके सिवा कोयी नही, दुनिया के बोहोत से कामो मे बाज़ ओकात किसी इन्सान से जो मदद मांगी जाती हे, वो उसे काम बनाने वाला समज़ कर नही बल्के एक जाहिरी सबब समज़ कर मांगी जाती हे^. हमे सीधे रास्ते की हिदायत अता फरमा^. उन लोगो के रास्ते की जिन पर तुने इनाम किया हे^. ना के उन लोगो के रास्ते की जिन पर गजब नाजिल हुवा हे, और ना उन लोगो के रास्ते की जो भटके हुए हे^.

हवाला- उर्दू आसान तर्जुमा ए कुरान तश्रीहात के साथ/३ से लिप्यान्तरण किया है.
हज़रत मुफ्ती तकी उस्मानी दा.ब.